विधाता की अनमोल कृति

जगत नियन्ता, नव सृष्टि के रचयिता ने नवयुग के सृजन के लिए इतने बड़े संसार के करोड़ों आत्माओं से जिसे ढूढ़ कर निकाला हो, नूर–ए–इलाही से जिसका जन्म हुआ हो, जिसे जानीजाननहार, त्रिकालदर्शी, दिव्यदृष्टि विधाता ने खोजा हो, जिसे परमात्म इबादत ने तराशा हो, जिसे त्रिभुवन त्रिपुरारी परमपिता की अनुपम अनुकम्पा जिसकी छत्रछाया बना हो, जिसे स्वयं भाग्यविधाता प्रजापिता ब्रह्मा ने स्वयं अपनी लेखनी से जिसकी तकदीर लिखी हो, वरदाता का वरद हस्त जिसके सिर पर हो, जिसके विवेक को स्वयं बुद्धेश्वर ने जाग्रत किया हो, जिसकी बुद्धि में साक्षात सरस्वती का निवास हो, वांग्देवी जिसकी जिह्वया पर विराजमान हों, सतगुरू अमरनाथ गुरू बन जिसका गाइड बना हो, ज्ञानसागर परमशिक्षक बन जिसे शिक्षित कर रहा हो, जिसकी लेखनी में महाविद्यादेवी का वरदान हो, आदि पिता आदिदेव ब्रह्मा एवं जगदजननी वरप्रदा ने जिसकी पालना की हो, सारे वेदों का ज्ञाता महावीर, प्रथम पुरूष जिसका माली हो, प्यार के सागर का असीम प्यार जिसकी जिज्ञासा को सिंचित कर रहा हो, वरदाता के अनमोल वरदान से जो प्रथम अराध्य बना हो, दिव्यदृष्टि के दाता ने जिसे दिव्यबुद्धि की नजर–ए–इनायत की हो, जो जगत नियन्ता का विश्वाश हो, जिस पर प्रभुवर की अबाध अनुकम्पा दिव्यदृष्टि की कृपा हुई, जिसकी कलम में जादूगर ने जादू भरा हो, जिसके जीवन को स्वयं विधाता ने सवाँरा हो, वह अति विशिष्ट ते विशिष्ट, श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ वो नियति एवं नियन्ता की अनमोल कृति थे............. आदरणीय जगदीश भाई जी ....।

1– आध्यात्म का दर्पण............

जिस प्रकार श्री कृष्ण के लिए कहा जाता है कि वो सर्वांग सुन्दर थे और वो हर क्षेत्र में पारंगत थे,दुनिया में कोई व्यक्ति कोई एक या दो विधाओं में पारंगत होता

है या महारत हासिल कर लेता है,पर श्री कृष्ण में हर कला 100% थी,श्री कृष्ण के लिए गायन है,कि अन्ये तो अंश अवतारा,पर श्री कृष्ण साक्षात परमात्मा का स्वरूप है, या श्री कृष्ण के लिए कहा जाता है कि प्रकृति से जितना सुन्दर शरीर बन सकता है उतना सुन्दर श्री कृष्ण थे, ठीक इसी प्रकार आदरणीय भाई साहब के लिए कहा जा सकता है कि हर बात उच्च कोटि की थी,उनकी हर चीज श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ थी,चाहें भावना हो या भाव, कृति हो या वृति, भाई साहब को हर बात में महारत हासिल थी, उनके शरीर छोड़ने के उपरान्त लन्दन के बलवन्त भाई जी सुना रहे थे, कि जगदीश भाई जैसे शरीर की एक–एक चीज पर PHD कर रखी हो,दिल्ली की डा0 ऊषा किरण बहन भी कहती थी, कि ब्रेन के बारे में भाई साहब को जितना नॉलेज है उतना हमें भी नहीं है अर्थात उन्होंने ऐसे कोई विज्ञान में रिसर्च नहीं किये हुए थे, परन्तु ऐसा लगता था कि जैसे हर चीज पर रिसर्च कर रखें हों। दूसरी बात सिर्फ विज्ञान की ही बात नहीं, आध्यात्म हो या व्यवहार हो, भक्ति हो या समाज हर क्षेत्र में उन्हें महारत हासिल थी, श्री कृष्ण को साक्षात भगवान कहते हैं, ठीक इसी प्रकार भाई साहब को भी भगवान के समस्त ज्ञान को यथार्थ समझने वाले, समस्त ज्ञान का साक्षात स्वरूप कहा जा सकता है, अगर ज्ञान का सम्पूर्ण स्वरूप देखना हो,तो भाई साहब का जीवन किसी भी एंगिल से देखा सकता है,तीसरी बात इस पतित विकारी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत संसार में पुराने शरीर से जितना अच्छा ज्ञान को धारण किया जा सकता है,उतना श्रेष्ठ ते श्रेष्ठतम् पुरूषार्थ कर भाई साहब ने जीवन में धारण कर जीवन को उदाहरणमूर्त बनाया था, अब इसे ड्रामा कहें या बाबा की अनुकम्पा या फिर उनका पुरूषार्थ मान उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहिए।

2– पिछले जन्मों से पुरूषार्थ के प्रणेता...............

संसार में कई महान व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने किसी एक क्षेत्र में महान कार्य किये हैं, जिसके कारण ही उनका जीवन संसार के आगे प्रेरक दर्पण बना,

परन्तु लगभग सभी ने एक निश्चित उम्र के बाद ही विशेष कार्य करना प्रारम्भ किया, परन्तु भाई साहब ने बहुत ही छोटी उम्र से ही आध्यात्म के अन्वेषक बने, बाल्यावस्था से ही ध्यान की साधना करना आरम्भ कर दिये थे, यह बिना पूर्व जन्म की तपस्या के सम्भव ही नहीं हो सकता, क्योंकि समझदार होने पर हर चीज का अनुभव करने के बाद भी तो लोगों का ध्यान नहीं लगता, पर भाई साहब बिना किसी गाइड के ही बचपन से ही मेडीटेशन का अभ्यास करते थे, उनकी इसी अभिरूचि के कारण उनके घर वाले उन्हें ऋषिकेश कहते थे, और ज्ञान में आने बाद उनके पुरूषार्थ की जो स्पीड थी यह पिछले बिना जन्मों के पुरूषार्थ के सम्भव ही नहीं थी।

3–राधा की तरह निश्छल प्रेम.................

भाई साहब को ज्ञान तो उद्धव की तरह था, पर प्रेम उनका गोपियों की तरह था, हमने किसी भी प्रसंग में किसी के द्वारा, कभी भी बाबा की बात में भाई साहब को कोई क्वेश्चन करते न सुना न देखा, जो इतना तार्किक हो, हर बात की इतनी गहराई में जाता हो, ज्ञान में आने के पहले 15000 से भी अधिक किताबों का जिसने अध्ययन किया हो, खुद इतना बड़ा फिलॉसाफर हो, दर्शन की हर विधा में प्रवीण हो,आध्यात्म से लेकर भक्ति एवं सन्यास के साथ हर धर्म की अनेक पुस्तकों में सम्पूर्ण सत्य की तलाश की हो, और इस ज्ञान को साधारण रीति से सुनाने वाली बहनों से सुनकर भगवान पर सम्पूर्ण निश्चय कर लिया, जिन बहनों ने धर्म की कोई पुस्तक पढ़ी नहीं थी और बाबा से मिलकर कोई तर्क तो क्या कोई जिज्ञासा वश भी प्रश्न पूँछा ही नहीं, और पहली ही मुलाकात में बाबा ने कह दिया कि तुमने जो अब तक पढ़ा है, वह सब भूसा है और वो भी सड़ा हुआ, जो जानवरों के भी खाने योग्य नहीं है, बाबा के इस कथन की कोई प्रतिक्रया भी नहीं की, और बाबा ने जब लिखने के बारे टिप्पणी की, कि जब तुम ये लिखोगे कि राम की सीता नहीं चुरायी

गयी,तो लोग तुम्हें डंडा मारेंगें, पहली बार किसी गहन विचारक को कोई इस तरह का कमेन्ट करे और वो न कोई प्रश्न न कोई रियेक्शन ऐसा कोई कैसे कर सकता है? हॉ ये सिर्फ वही कर सकता है जो निश्छल निःस्वार्थ प्रेम करता हो, बिल्कुल राधा की तरह। बाल्यकाल से जिस परमात्म सत्य की प्रचण्ड जिज्ञासा चली आ रही हो, और परमात्म ज्ञान मिलने के बाद कोई क्वेश्चन नहीं उठे, ये गोपियों की तरह प्रेम की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या हो सकता है?

4– बाबा के प्रति अहोभाव..................

ब्रह्मा बाबा के प्रति जो भाई साहब का अहोभाव था,वो इतना उच्चकोटि का था जिसको शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल ही नहीं, कम से कम मेरे लिए तो असम्भव ही होगा! बाबा के प्रति उनके बोल के साथ चेहरे की भाव भंगिमा दर्शाती थी, कि बाबा कितना नायाब व्यक्तित्व है, 25/12/82 की मुरली में बाबा ने कहा है कि बच्चे अपने बारे में उतना नहीं जानते, जितना बाप बच्चों के बारे में जानते हैं, ठीक इसी प्रकार बाबा के साथ रहने वालों ने भी, शायद बाबा को इतना नहीं जाना होगा जितना दूर रहते और बाद में आते भी भाई साहब ने बाबा को जाना व पहचाना, कि ये साधारण वेष में कौन है? इसीलिए ही भाई साहब का बाबा के प्रति अथाह रिगार्ड रहता था, ये कहना मुश्किल होगा कि भाई साहब ने कभी शिवबाबा से ब्रह्मा बाबा को अलग समझकर बात की होगी, वैसे ज्ञान में जब वो आये, तो उनकी शारीरिक आयु कोई बहुत बड़ी तो थी नहीं, जिसके कारण जीवन या संसार का बहुत अनुभव होता, पर पता नहीं विधाता ने उन्हें किस मनोयोग से रचा था, कि विद्वानों के विद्वान भी, बताने पर भी जिसे न पहचान पाये, उसे भाई साहब ने इतनी अच्छी तरह वो भी इतनी कम उम्र में ही,न सिर्फ पहचाना,बल्कि उनकी हर बात को जीवन के हर आचरण में निःसंकोच उतार लिया,बाबा की किसी भी बात में उन्होंने संशय तो क्या कोई संकल्प भी नहीं उठाया,बस केवल और केवल शिरोधार्य किया। बाबा

के प्रति इतना ऊँचा भाव कि सब कुछ सहने वाला व्यक्ति,फिर अगर कोई बाबा के प्रति अपमानित करने वाले बोल बोलता, तो उनको असहनीय होने लगते, एक होता है अन्धभक्ति, दूसरा होता है अटैचमेन्ट, और भाई साहब का था उस व्यक्तित्व की यथार्थ कद्र जानकर प्रतिष्ठा देना, भाई साहब ने बाबा की वास्तविक पहचान को जान और वो मान, मन में सहेजा था जो साधारण मनुष्यों के समझ से बाहर की बात थी, और बाबा को पहचाना भी तो कितनी गहराई एवं शुरूड बुद्धि से जो कि सबके लिए बेशक मुश्किल होगा, क्योंकि बाबा न तो कोई प्रकाण्ड पण्डितों की तरह संस्कृत में बड़े जटिल श्लोकों की व्याख्या करता था, न ही भाव-विभोर करने वाले भजनों की प्रवाहित रस मंजरी बहाता था, न ही बाहर से महामण्डलेश्वरों की भाँति वेशभूषा या त्रिपुण्ड अथवा आसन आदि लगाता था, एकदम साधारण रीति से हजारों साल से समाज में फैली भ्रान्तियों का बड़ी शालीनता से काट देना और फिर द्रढ़ता के साथ समाज के हर वर्ग के विरोधी होने के बाद भी अपनी बात पर निर्भय होकर डटे रहना, बिना किसी प्रलोभन के उचित बातों को निःर्भयता से कहने वाले को, भाई साहब ने जिस संजीदगी के साथ पहचाना और जितनी उत्कटता के साथ उनका अध्ययन किया और उसी श्रेष्ठतम भाव को बड़ी निष्ठा के साथ अपने मन में, उनकी तालीम के रंग अपने जीवन के कैनवास में चरित्र के रूप में भरे, सर्वमान्य बाप को नहीं, सर्वश्रेष्ठ पिता को न सिर्फ पहचाना बल्कि उनको अपना मान औरों को भी मानने के लिए इतनी सरलतम् पटकथा लिखी कि हर बेगाने शख्श को भी अपनत्व पैदा हो जाए। आदि पिता ब्रह्मा बाप की जिस अस्हाब की तस्वीर भाई साहब के ह्रदय पटल पर थी, वैसी शायद ही किसी और के मानस में बन पाई हो।

5 – मम्मा के प्रति ग्रेटेट्यूड..................

भाई साहब ने मम्मा जगतमाता सरस्वती वांग्यदेवी की जैसी व्याख्या की है, शायद ही किसी कवि ने कहीं पर किया हो! वैसे कवि लोग यदि किसी की विवेचना करते भी हैं,तो वह वास्तविकता से काफी हद तक अलग ही होती है,पर भाई साहब ने मम्मा के लिए जो प्रसंशा के फूल अर्पित किये हैं, वह कोई अतिश्योक्ति नहीं है, उनकी पारखी नजरों ने साक्षात अवलोकन किया था,जो उनके शब्दों की अभिव्यंजना दर्शन कराती है,मम्मा के प्रति उनके अन्तस में जो निर्मल अनुराग था,वह चाहे केशर से पत्र लिखना हो,या फिर आरती करना हो, वह जो दिल में अजीम अक्स था जगतमाता का जगतमाता के सामने, सरस्वती वरदान भला क्यों नहीं देगी? और बाबा भी जब आग्रह करे कि मम्मा इस बच्चे की बुद्धि में बैठ जाओ,तो मम्मा तो है ही दाती। भाई साहब के हृदय में मम्मा बाबा के प्रति जो इख्लास संवेदना रक्त की तरह धमनियों में बही वह जीवन के अन्तिम श्वॉश तक सतत कायम रही।

6–साहित्य के पुरोधा...............

साहित्य के सृजन के कारण ही बाबा ने उन्हें दिव्य दृष्टिधारी संजय नाम दिया था, अर्थात दिव्य बुद्धि के विधाता ने, उन्हें दिव्य दृष्टि का वरदान दिया था, और भाई साहब ने अपने उस नाम को सार्थक भी कर दिया, समाज में 2500 वर्ष से जितनी भ्रान्तियॉं फैली हुई थी, भ्रान्तियॉं न सिर्फ समाज में फैली थी, बल्कि जन मानस के जेहन में ऐसी समाहित हो चुकी थी, कि यही सम्पूर्ण सत्य है, धर्म की हर पुस्तक इसका प्रमाण देती थी, इसलिए वो बातें संसार के सामने किसी के लिए भी अकाट्य थी, जिसके विपरीत बोलने पर लोग कड़े से कड़ा दण्ड निधार्रित करते थे, सदियों से मनुष्य के जेहन में बैठी अकाट्य सर्वमान्य बातों को भाई साहब ने अपने तीसरे नेत्र अर्थात दिव्य बुद्धि से ऐसी अकाट्य एवं अन्तस में बैठी बातों को काटने व

निकालने के लिए भगवान के ज्ञान को समाज में कुछ इस अन्दाज में रखा, जिसका कोई काट्य नहीं,अथवा आज तक किसी का विरोध सामने नहीं आया, दूर से विरोध किसी ने भी किया हो या करता रहा हो, पर जिस तरह से पहले अन्य लोग धर्म की बातों में शास्त्रार्थ करते तो, डंडा तक चलने लगते थे, पर भाई साहब की लिखी किसी भी किताब पर किसी ने चैलेन्ज की ऊँगली नहीं उठाई। भगवान ने जिस सन्दर्भ से ज्ञान को अनमोल कहा है, भाई साहब ने उसी अमूल्यता को जेहन में रख उसे शब्दों में ऐसा पिरोया कि आध्यात्म नीरसता की गुफा से निकल, अन्तर्मन के सौन्दर्य की झील लगने लगा। साहित्य का पुरोधा उन्हें इसलिए नहीं कहना चाहिए कि उन्होंने बहुत सारी किताबें लिखी, पर साहित्य का पुरोधा उन्हें इसलिए कहना चाहिए कि उन्होंने साहित्य के लिए जीवन को साधना में तपाकर साहित्य को भी तपस्या की तरह जिया, लिखते तो बहुत लोग हैं, और उनकी किताबें बेस्ट सेलिंग भी बन जाती हैं, और एकेडमी या सरकार उन्हें सम्मानित भी करती रहती है, समाज में धन के साथ यश भी प्राप्त होता है, पर भाई साहब ने वो लिखा जो अगम– निगम के भेद खोल दे, उसकी वाणी को लिपिबद्ध किया जो न सिर्फ ज्ञान का सिन्धू है बल्कि त्रिकालज्ञ भी है, जिसको समझना बड़े–बड़े ऋषि–मुनि, विद्वान–पण्डित व साइंसदान भी अपने अति सूक्ष्म ते सूक्ष्म यन्त्रों से जिसे न खोज सके, दूसरा जिस साहित्य का सृजन भाई साहब ने किया,उसने समाज में गिरते चारित्रिक पतन को रोकने का आधार दिया, जिसे पढ़कर जीवन जीने का मकसद मिल जाये, भले ही अन्तरमन में पूरा उतार न पाये, पर जिसने भी पढ़ा दुश्मन के मन को भी झकझोर दे मुरीद बना दिया, साहित्य का पुरोधा उन्हें इसलिए भी कहा जाना चाहिए, क्योंकि जो एक सच्चे ईमानदार साहित्यकार को करना चाहिए, भाई साहब कहा करते थे कि अगर किसी की बात को अपने वक्तव्य या लेख में करते हैं, तो उसका रेफरेन्स अवश्य देना चाहिए, नहीं तो ये साहित्यिक चोरी मानी जायेगी और भाई साहब ने जहाँ भी, कभी किसी की बात का उल्लेख

किया, तो उन्होंने उसका बाकायदा नाम सहित रेफरेन्स दिया। साहित्य के पुरोधा वह अपनी अपूर्व मेधा एवं परमात्म अनुकम्पा के कारण ही बने कहेंगें, पर ये कहना अतिश्योक्ति कतई नहीं होगी,कि उन्होंने जो लिखा वो सम्पूर्ण रूप से पहले अपने जीवन में प्रैक्टिकल उतारा या यथार्थ समझा फिर समाज के सामने रखा,जिसका उदाहरण अपने एक क्लास में उन्होंने स्वयं ही दिया था,कि एक बार बाबा ने उन्हें 100 पेज की किताब लिखने के लिए कहा,उस समय भाई साहब के पास न तो आज की तरह कोई कम्प्युटर,न ही टाइपराइटर न ही कोई टेबेल या चेअर ही हुआ करती थी,न ही एकान्त के लिए अलग से अपना कमरा,बस पेन कागज और बुद्धि, जिसके आधार से ही भाई साहब ने 100 पेज की किताब लिखा और लिखने के बाद बाबा को बताया कि बाबा किताब लिख गयी है,तो बाबा ने कहा, वहाँ जो साथ में बहन है उसको चेक करा लो,तो चेक कराने के बाद फिर से उसे फेंअर किया,फिर बाबा को बताया,तो बाबा ने दूसरी बहन से चेक कराने के लिए कहा,इसी प्रकार वहाँ रह रही करीब–करीब 8–9 बहनों से बारी – बारी से चेक कराने के लिए कहा,भाई साहब की शुद्ध हिन्दी को हर बहन ने अपने अनुसार समझ शब्दों का परिवर्तन सिन्धी शब्दों में कर दिया, जिससे भाई साहब की मूल रचना में बहुत कुछ सिन्धी मिक्स होकर अलग–अलग मनोभावों को व्यक्त करती करीब 100 पेज की किताब जब मधुबन पहुँची, तो बाबा ने फिर लखनऊ एवं कानपुर से आये दो प्रोफेसर्स से चेक कराने के लिए कहा, तो उन्होंने वो भाषा देखकर फिर कुछ परिवर्तित कर भाई साहब को बड़ी दयनीय नजरों से देखते हुए बोला,ये आपने क्या लिखा है? फिर भाई साहब ने उसे फेंअर किया, फिर बाबा ने मम्मा के साथ कई सीनियर्स की मीटिंग में पास कराने के लिए दिखाने को कहा, तो मीटिंग में किताब छापना कैंसिंल हो गया, और मीटिंग समाप्त होते भाई साहब वापस आ रहे थे, तो दूसरी ओर से बाबा आ रहे थे, हॉल के बीच में जब दोनों लोग मिले, तो बाबा ने पूँछा कि बच्चे मीटिंग में क्या हुआ? तो भाई साहब ने बताया कि मीटिंग में किताब छपना कैंसिल होके, पर्चे छपने की बात

फाइनल हुई है, तब बाबा ने बड़ी भावना से भाई साहब को गले लगाकर जैसे लिखने का वरदान दे दिया हो, कहा कि आज के बाद तुम जो लिखोगे उसे किसी को भी दिखाने की आवश्यकता नहीं,बाबा को भी नहीं, तुम जो लिखोगे उसे भगवान पास करेगा, यह वरदान बाबा ने कोई अनायास या ऐसे ही नहीं दे दिया,न ही कोई भाई साहब को यह पता था, कि बाबा कोई मेरी परीक्षा ले रहे हैं,जब कोई लिखता है तो लिखने वाले के मन में कोई एक चित्र होता है जिसका विश्लेषण वह शब्दों के आधार से करता जाता है दूसरा व्यक्ति जो उस भाषा का इतना जानकार भी न हो, उसे उस स्वरूप में नहीं लिख सकता, फिर करीब 9–10 बार उसे प्रुफ कराते–2 उनके मन में एक बार भी अपनी विद्वता का, एवं दूसरों से इंगित शब्दों के ऊपर जरा भी रोष या झुंझालाहट या किताब के न छपने के डिसीजन पर न तो मन में कोई खेद या मतभेद या दिलशिकस्ती का भाव ही आया, इतनी सहनशीलता एवं धीरज का पाठ पढ़ा, ये उनकी साहित्य सजृन की अपूर्व क्षमता का परिचायक है, जिसके कारण ही बाबा ने उन्हें इतने बड़े वरदान के योग्य समझ, उन्हें सुशोभित किया। साहित्य को तो बहुत लोग समर्पित हैं, पर भाई साहब सिर्फ भगवान के ही साहित्य के लिए समर्पित थे, उनके कलम में तलवार से भी तेज धार इसीलिए थी, बिल्कुल वैसे जैसे एक बार तानसेन का गीत सुनकर अकबर बादशाह बहुत प्रभावित हुए और उनकी बहुत महिमा किया, तो तानसेन जी कहते हैं कि जहाँपनाह हमारा गीत कहाँ इतना सुन्दर, गीत तो हमारे गुरूजी गाते हैं, तब अकबर बादशाह उनका गीत सुनने की इच्छा जाहिर करते हैं, तो तानसेन कहते हैं, कि उनको सुनने के लिए तो उन्हीं के पास जाना पड़ेगा, और जब एक दिन छिपकर दोंनों उनका गीत सुनते हैं और भाव–विभोर हो दुबारा सुनाने के लिए आग्रह करते हैं, तो हरिदास जी बड़ी भावना के साथ कहते हैं, कि मैं सिर्फ अपने प्रभु के लिए ही गाता हूँ, इसीप्रकार लोग भले साहित्य को समर्पित हों, पर उनका उन्हें धन या ईनाम या परितोषिक तो मिलता ही है, पर भाई साहब को उनके ही कॉलेज के

प्रिन्सीपल ने कॉलेज की निकलने वाली मैगजीन के लिए एक आर्टीकल लिखने के लिए कहा था, जिसका वह पारितोषिक भी देने वाले थे, परन्तु भाई साहब ने मना कर दिया और बड़े गर्व से कहा, अब ये कलम सिर्फ भगवान के लिए ही है, जिन्हें न कोई धन की अभिलाषा,न मान की आकांक्षा, न ही उपाधि की अपेक्षा,लिखने को तो वे किसी भी क्षेत्र में लिख कर यश–कीर्ति–धन–ऐश्वर्य सब कुछ प्राप्त कर सकते थे, ऐसी मेधा के धनी थे कि उनकी कलम में बेजोड़ ताकत थी, उनके शब्द तीर तो क्या तोप के गोले के असर से भी कम नहीं थे।

7– प्रथम आराध्य.............

संसार में प्रथम आराध्य देव सर्व विघ्नहर्ता सिद्धिदेव गणेश को ऐसे ही नहीं कहा गया है, उसका भी कोई कारण बना होगा, बिना कर्म किसी को कोई यहाँ सम्मान देता नहीं है, तो जानीजाननहार एवं त्रिकालदर्शी बाबा ने उन्हें ये गणेश नाम ऐसे तो नहीं दिया होगा! यज्ञ जब भारत में आया तो चाहे कोई झगड़ा हुआ या सेन्टर का स्थानान्तरण करना हुआ या कोई बड़ी कॉन्फ्रेन्स या सम्मेलन करना हो या सेवा का निमन्त्रण हो, जिसमें अगर भाई साहब पहले ही गये,तब तो कोई झगड़ा–लड़ाई नहीं, मतलब भाई साहब का समझाने का अन्दाज इतना पॉजीटिव एवं कन्विन्सिग होता था, कि सारी सभा को भी हर बात इतना अच्छी तरह से स्पष्ट हो जाती थी, कि सत्य सामने आ जाता था, इसी प्रकार जहाँ पर झगड़े आदि भी हुए तो भाई साहब ही सबसे आगे खड़े हुए और तब तक सामने खड़े रहे, जब तक कि झगड़ा समाप्त नहीं हो गया, उसके लिए गवर्मेन्ट के यहाँ पत्र व्यवहार करना हो या उसके चक्कर लगाना पड़े, या फिर बात करके या फिर मार खाकर सहन करके समस्या का समाधान किया या कराया,यज्ञ में जहाँ भी जरूरत पड़ी बाबा ने बड़े विश्वाश व अधिकार से भाई साहब को ही खड़ा किया, बाबा को ये बहुत अच्छे से पता था कि ये कार्य सिर्फ यही कर सकता है, इसलिए ही बाबा ने आपको भेजा, और भाई साहब

भी एक मजबूत दीवार बनकर खड़े हो जाते थे, जिसके कारण कई बार उन्हें लोगों ने इतना मारा कि मरा हुआ समझकर ही छोड़ा, पर भाई साहब को इसका जरा भी भय नहीं व दर्द फील नहीं किया। इसी प्रकार कोई भी कार्य हो चाहे साहित्य का, या गवर्मेन्ट का, बाबा ने सदा ही हर कार्य के लिए निःसंकोच भाई साहब पर नजरें टिकाई अर्थात भगवान की उम्मीद बनें, इसी कारण जब भी कोई कार्य होता तो बहनें भी जिन्हें बाबा देवियाँ कहते, वे भी भाई साहब के आने पर निश्चिन्त हो जाती और कार्य की सफलता को भी निश्चित मानती थी, और दिल्ली में भी कितनी सेवाएं जो असम्भव हुई उनको भाई साहब ने आगे आये और सम्भव हो गयी,चाहे वह दिल्ली का इंडोर स्टेडियम हो या क्रिकेट मैदान, दोनों को ही लेना नामुमकिन था,पर भाई साहब ने अकेले ही मुश्किल को मुमकिन में बदल दिया,चाहे प्रिटिन्ग का कार्य हो, या सरकार से कोई कार्य हो, इस प्रकार हम देख सकते हैं कि भगवान हो या देवतायें किसको याद किया–इसी प्रकार भक्ति में ये प्रथा चली कि गणेश को पहले याद करने से विघ्न नहीं आयेंगें या गणेश को विघ्न विनाशक या विघ्नहर्ता कहते हैं। दूसरा गणेश के सामने मोदक भी दिखाते हैं, भाई साहब ने अपना प्रोपोगण्डा कभी नहीं किया, बल्कि सारे संगठन को लेके चले, पूरी दिल्ली को एक साथ बाँध कर रखा, कोई भी सेवा हो सबको राजी किया, उनका बड़ा पेट इसका भी प्रैक्टिकल भाई साहब ने करके दिखाया, कि किसी की भी बात को किसी और जगह या किसी और को नहीं सुनाई, या न सुनाने वाली बातें कभी भी किसी को नहीं सुनाई, तीसरी बात गणेश का एक पैर धरती पर और एक ऊपर, बाबा ने भाई साहब को ही छुट्टी दी थी कि तुम बाहर की किताबें पढ़कर फिर उसका कॉन्ट्रास्ट

लिखो या फिल्म देखकर आओ पर भाई साहब को कभी इन चीजों का असर नहीं हुआ, पुरानी दुनिया की चीजों को पढ़ते–देखते भी उससे सदा उपराम रहे, चौथी बात गणेश को हाथी का सिर और चूहे की सवारी, इतनी विशाल बुद्धि इतनी सूक्ष्मता की पैनी नजर कि कोई बच नहीं सकता, पर जबान की हर चंचलता पर पूरा

कन्ट्रोल, चूहे से बड़े से बड़ा घर भी नहीं बच पाता, पर भाई साहब ने अपनी हर कर्मेन्द्रिय पर फुल कमाण्ड था, चाहे बोल चाहे नजर,चाहे टेस्ट हो या मन।

8– बहनों के लिए दिल का आदर................

अपने जीवन में कई बहनों व माताओं की इज्जत तो हर व्यक्ति करता है, पर वो सम्मान या तो गुणों पर या संबंध या फिर किसी कर्म के आधार पर आधारित होता है, पर भाई साहब ने बहनों को बाबा ने आगे रखा है, इसलिए आँख बंद करके उनका सम्मान किया, ऐसा भी नहीं कि वे बहनें सम्मानीय नहीं थी, नहीं वे सम्मान की अधिकारी तो थी, पर उनमें कितनी छोटी बहनों को चाहे वह आयु में, ज्ञान में भी कम और कम समय की भी होती थी, पर भाई साहब वहीं नीचे बैठकर उतने ही आदर के साथ मुरली सुनते, न सिर्फ मुरली सुनते बल्कि कर्मक्षेत्र पर भी हर बहन को उन्होंने उतने ही हृदय से सत्कार दिया। चाहे शुरू में दादियों के लिए कंधे पर बर्फ लाना हो या फिर सम्मान की बात रही हो, कभी भी सम्मान की बात हुई तो बड़ी भावना से कहा कि सम्मान तो दादियों का करो, इन्होंने 14 वर्ष तपस्या की है,इन्होंने यज्ञ के लिये कितना सहन किया है, इन्होंने ही यज्ञ को सँभाला है, दूसरा ये भी कहते कि अष्ट रत्नों में तो ये दादियाँ ही आयेंगी, क्योंकि इन्होंने तो निःसंकल्प हो बाबा के साथ, बाबा की हर बात को सहज ही स्वीकार कर लिया, कोई तर्क नहीं, कोई संशय नहीं,ये भावना वाले हैं और हम तर्क वाले, इनके बराबर कहाँ जा सकते हैं। हर बहन के प्रति इतनी शुद्ध निर्मल श्रेष्ठ भावना कि वैसे भाई साहब व्यस्तता के कारण किसी को क्लास कराने नहीं आते थे, पर भाई साहब अगर मधुबन में आये हुए होते थे तो कैसे भी समय निकालकर वह बहनों को,कुमारियों को क्लास कराने अवश्य आते और कहते अगर यज्ञ की टीचर्स श्रेष्ठ होंगी,तो यज्ञ प्रयत्क्ष हो जायेगा और पहली बार विदेश जाने वाली बहनों को तो कितने दिनों तक क्लास करा–करा कर तैयार किया था, छोटी बहनों को भी आगे लाने के लिए उनकी

विशेषताओं को लाने के लिए पुरजोर कोशिश करते, कि उन्होंने भी जीवन श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए समर्पित किया है, तो उनको भी अपनी योग्यताओं एवं हुनर दिखाने के लिए अवसर के साथ स्टेज भी मिलना ही चाहिए, जिससे कभी भी उनका संकल्प न चले, हर बहन यज्ञ का प्रतिनिधित्व करती है, तो उसको उतना लायक बनाने में भाई साहब की आजीवन भावना रही, बिना किसी स्वार्थ के इतना अच्छा गाइड करते कि हर बहन को दिल में इतनी खुशी के साथ गर्व होता कि हम ऐसे परिवार के सदस्य हैं जहाँ इतने बुद्धिमान मेरे भाई हैं और दिल से उद्गार निकलता कि काश ऐसे भाई हमें पहले ही मिल जाते और सबको भी मिलते।

9–चरित्र की चेतना में निर्मलता की चमक..................

भाई साहब बिना बोले ही लोगों के जीवन में परिवर्तन कर भी देते और करा भी देते थे, भाई साहब के सानिध्य में जो भी आया वो उनके चरित्र से प्रभावित हुए बिना रह नहीं सकता,कितने काम उन्होंने संस्था का विरोध करने वालों से सिर्फ अपने चरित्र एवं व्यवहार से करवा लिए, जैसे बाबा को गाली देने वाले एक दिन बाबा के आगे समर्पित हो जाते थे, ठीक उसी प्रकार भाई साहब को भी सुना–सुना कर एक भाई रोज संस्था को खूब गालियाँ देता था, कभी–कभी भाई साहब को भी देता था, पर भाई साहब ने उससे मीठा बोल–बोल कर,उसे परिवर्तन कर ही डाला, दूसरा विदेश में एक चेन स्मोकर सिर्फ उनके बगल में बैठकर कैसे सारा दिन सिगरेट पीने का ख्याल ही नहीं करता, उसके प्रति तो भाई साहब ने कोई संकल्प भी नहीं किया था, ये उनके चरित्र की निर्मलता ही थी, जो कि किसी के भी चित्त की मलीनता को भी धो डाले, जैसे कि गाँधी जी के लिए भी कई जगह कहा गया है, कि उन्होंने दुश्मन के भी दिल में जगह बना ली थी,कहीं–कहीं भगतसिंह के लिए भी कहा गया है कि दुश्मन भी उनकी दिलेरी एवं श्रेष्ठ भावना के कारण एक झलक देखने के लिए लालायित रहते थे,इसी प्रकार भाई साहब के भी चरित्र की खुशबू

ऐसी,कि दूसरों के अवगुणों की दुर्गंध बिना कुछ किये ही समाप्त कर दें, अपनी चित्त की निर्मलता के कारण ही वह कई बार भगवान को भी खींच लेते थे,क्योंकि बाबा भाई साहब के आते ही सबको बाहर भेज देते थे और कहते थे कि जब ये मेरे सामने आता है तो मेरे में भगवान की प्रवेशता होती है,और हो भी क्यों नहीं,आखिर बागवान भी अपने बगीचे के फूल की सुन्दरता एवं सौरभ को देखे बिना भला कैसे रह सकता है !

10– सर्वस्व समर्पण................

यज्ञ में भले भाइयों का समर्पण समारोह नहीं मनाया जाता पर भाई साहब बिना समर्पण समारोह मनाये भी सर्वप्रथम और सर्वस्व समर्पण करने में हम तो समझते है कि सबसे आगे निकल गये, भारत में समर्पित होने वाले उन्हें सबसे पहले और सबसे श्रेष्ठ कुमार कहेंगें, और आप उस समय संस्था में समर्पित हुए जब आप उस समय के हिसाब से एक शानदार नौकरी कर रहे थे और यज्ञ एक ऐसे इम्तिहान के दौर से गुजर रहा था, जिसमें बाहर से जो स्थिति दिखाई देती थी, वह सिर्फ एक पारखी ही पहचान कर अपने आप को उसके लिए अपना जीवन समर्पित करता,और भाई साहब ने एक आली उस्ताद की तरह गुप्त रूप में आये हुए परमात्मा पिता को इतने निश्चय के साथ पहचाना कि संसार की नश्वरता को भी जान लिया और उसके पुनीत कार्य स्वर्णिम संसार के सृजन के लिए स्वयं को समर्पित करने का विनम्र अनुरोध किया, और ये भी कहा कि अब आप चाहे तो मुझे उठवा के फेंकवा दीजिए, पर अब मैं यहॉ से जा नहीं सकता, क्योंकि जब हमें भली भॉति ये पता चल गया है कि भगवान स्वयं धरती पर आ गये हैं विश्व परिवर्तन के लिए और मैं उन्हें पहचानने के बाद भी विनाशी कौड़ियों के धंधों में समय बर्बाद करूँ, ये तो नामुमकिन है, क्योंकि उस समय भाइयों को समर्पित करने की बात ही नहीं थी, इसलिए कोई भी वहॉ पर रहने वाली दादी रखने को तैयार नहीं थी, पर भाई साहब

ने कहा कि भगवान को जान लेने के बाद अब संसार में क्या करने के लिए जाना है? उसके बाद फिर चाहे कोई साधन-सुविधाएं मिली या नहीं मिली, कितने भी अभाव का समय या परिस्थितियाँ आयी, पर भाई साहब ने न तो कभी बाबा से मांग की, न तो कोई कभी शिकायत की, न ही यज्ञ से कभी कोई उलहना, अपना समय- श्वाँश- संकल्प - तन-मन-धन जो भी है, सिर्फ यज्ञ के लिए ही है,यज्ञ से हमें क्या मिल रहा है या यज्ञ हमें क्या देगा ये कोई चिन्तन नहीं, बस यज्ञ को हम क्या दे सकते हैं यही अनुराग प्रतिपल-पतिक्षण लगा रहा, चाहे कपड़ों की बात करें तो भी सरकार के बड़े-बड़े अधिकारियों से मिलना और बड़े-बड़े सम्मेलनों में न सिर्फ शिरकत करने जाना बल्कि स्टेज पर जाकर अहम वक्तव्य देना है,और कपड़े इतने जराक्रान्त कि रिक्शे पर बैठते ही फटने लगते,जिससे सुई धागा हाथ में लेकर ही चलते थे,या पुरानी पैन्ट और एक छोटे से कुर्ते को पहनकर बड़े से बड़ी प्रेस कॉन्फ्रेन्स करना। दूसरी बात अगर बाबा ने कहा कि बच्चे ये किताब 3 दिन में छपनी चाहिए तो खाना-पीना-सोना सब कुछ भूल बस वही नियति एक मात्र दिवास्वप्न हो गया। अपना जीवन क्या होता है यह भूल ही गया,जिन्दगी प्रभु अमानत है अब वो जैसे चाहे, जहॉ चाहे, जब चाहे,जितना चाहे उपयोग करे, भाई साहब की ये भावना कोई मजबूरी वश नहीं थी,बल्कि जिगर के बोल थे। अनुरोध करने पर भी भाई साहब कभी अपना अनुभव नहीं सुनाते थे, अपनी कोई भी बात किसी को बताना ही नहीं चाहते थे,यहॉ तक कि बाबा ने अनेक मुरलियों में प्रसंशा या जिस भी कारण नाम लिया तो बाबा के अव्यक्त होने के बाद उसको भी निकलवा दिया,कि किसी को मेरे बारे में जरा भी पता न पड़े, सिर्फ बाबा और यज्ञ बस और कुछ नहीं ,कोई नहीं,जैसे साकार बाबा ने अपना सब कुछ सफल किया ऐसे ही भाई साहब ने भी फॉलो किया।

11- विलक्षण प्रतिभा के धनी.............

जैसे कि विवेकानन्द को अमेरिका में धर्म सम्मेलन में बोलने के लिए ईर्ष्या वश जीरो दिया गया, पर उन्होंने इतना सुन्दर वक्तव्य दिया कि उस जीरो ने ही उनको वेदान्त एवं भारतीय संस्कृति का हीरो बना दिया, इसी प्रकार भाई साहब भी एक बार V अक्षर पर क्लास कराया,तो सारे ब्राह्मण जीवन का सार सुना दिया और कई बार मम्मा को पहले से ही कहते थे, कि मम्मा अगर ये बात की जाये तो इससे 15 फायदे होंगें और अगर नहीं की गयी तो 20 नुकसान होंगें, तो मम्मा भी कई बार कहती थी कि अभी तो ये बात शुरू ही नहीं हुई है, और तुम्हें पहले से ही पता है? तो ऊँगलियों पर तुरन्त गिना देते, जिससे मम्मा भी उनकी बात का बड़ा वन्डर खाती थी,स्टेशन मास्टर हो या प्रेस मैनेजर या प्रेस के लोग, सरकारी महकमें के खास लोग हों या फिर जनता–जनार्दन, धार्मिक आस्था के साधू–महात्मा लोग हों या संसार के पहलवान लोग, उन्होंने सब पर अपनी चमत्कारिक बुद्धि का प्रभाव डाल परमात्म ज्ञान के मोहिनी में ऐसा बाँध देते थे, कि वे प्रभू का कार्य मन मुताविक करने के लिए तैयार हो ही जाते थे,यहाँ तक कि अफ्रीकी आदिवासियों के चंगुल में फँसने के बाद भी अपनी वाकपटुता से बच कर निकल ही आये थे, या फिर अपने लौकिक पिता से समर्पित होने के लिए सहज ही छुट्‌टी ले लेना। अपनी विशाल बुद्धि के कारण हर व्यक्ति परमात्म ज्ञान की एक–एक बात को बड़े ही सरल शब्दों में समझाने की अद्‌भुत कला में पारंगत थे।

12–वक्त के पाबंद................

एक बार भाई साहब पॉण्डव भवन में हम लोगों को 2 दिन की भट्‌ठी करा रहे थे,हम सभी छोटी बहनें ही थी और बारिस भी लगातार बहुत जोरों की हो रही थी,जिसमें 2 दिन सिर्फ भाई साहब के ही क्लास हुए थे,हर क्लास में भाई साहब से घड़ी मिलायी जा सकती थी,एक मिनट भी इधर–उधर नहीं, और हम छोटी बहनों को भी ऐसा मान देकर क्लास कराया जैसे हम लोग बड़े समझदार और यज्ञ के लिए

बड़े वैल्युबुल व्यक्ति हों, जिस संजीदगी के साथ उन्होंने हर क्लास कराया कि हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि वह दो दिन की भट्ठी सम्पूर्ण समर्पित जीवन की भट्ठी थी,आदर्श ब्रह्माकुमारी के लिए भट्ठी थी, एक परफेक्ट टीचर का जीवन कैसा होना चाहिए उसका एक शब्द चित्र निकाल कर दे दिया था, और यज्ञ के प्रतिकूल अगर कुछ भी किया तो हम आप लोगों को दुबारा क्लास कभी नहीं करायेगें की उलहने भरी हिदायत भी दी, और इतनी छोटी बहनों के लिए एक अति सुन्दर उर्दू कविता बनाकर लाये और सबको क्लास में सुनाया भी था,वो उनके दिल के उद्‌गार थे, कोई भी देखकर कह सकता था कि छोटी बहनों के लिए जिसके हृदय में इतना प्यार और सम्मान एवं शुभ भावना तो बड़ों के लिए यज्ञ के लिए कितनी प्रतिष्ठा होगी? हर क्लास में न सिर्फ वो वक्त के पाबन्द रहे,बल्कि उन्होंने सभी को भी समय की कद्र करने की शिक्षा दी, जैसे ज्ञान सरोवर की एक भट्ठी में आखिरी क्लास में कारण चाहे कोई भी रहा हो, पर कुछ बहनें देरी से क्लास में पहुँची थी तो भाई साहब ने कहा आप लोग तो जैसे तशरीफ का टोकरा लाकर पटक रहे हो,तो कई बहनों ने कहा कि भाई साहब हम लोगों का दोपहर का क्लास काफी लेट छूटा था,तो भाई साहब ने कहा इसमें हमारा क्या दोष ? आपका पिछला क्लास लेट छूटा, लेकिन अगले क्लास में लेट आना यह तो ठीक नहीं,वह कहते थे,हर कार्य एक निश्चित समय के अनुसार करो, अगर किसी को टाइम दिया है तो समय पर पहुँचों,उसे इन्तजार करवाना ठीक नहीं उसके समय का भी महत्व समझो, अगर साधन ठीक नहीं, तो उसी अनुसार घर से निकलो, साधन नही मिला तो दौड़ के जाओ, पर समय पर पहुँचो, तुम समय से हर कार्य करना शुरू करोगे तो, एक दिन सब लोग समय से कार्य करना शुरू कर देगें, और फिर हर कार्य समय से होने लगेगें।

13– भविष्य द्रष्टा.............

वैसे बाबा कहते हैं कि मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ पर कई सारी बातें जो हमने भाई साहब के क्लास में सुनी थी, जो बाबा के साथ उन्हें भी भविष्य द्रष्टा कहना चाहिए, वो कहते थे कि ज्ञान में आने के पहले ही उन्हें कई बातें पता पड़ जाती थी, दो तीन घटनायें उन्होंने बतलाई भी थी, एक गाँधी जी की मृत्यु के बारे में उन्हें पहले से ही आभास हो गया था और बाबा के अव्यक्त होने का भी वो बता रहे थे कि हमें पता पड़ गया था पर अन्तर्यामी बाबा को भी ये बात पता पड़ गयी कि मुझे बाबा के जाने की बात प्रतीत हो गयी है, तो बाबा ने हमें तुरन्त दिल्ली भेज दिया और दूसरी रात को जब फोन आया, तो मैं समझ गया कि ये बाबा के अव्यक्त होने का ही फोन आया है, इसलिए मैं जानबूझ कर फोन उठा नहीं रहा था, बाबा के इतने आज्ञाकारी वफादार कि जानते हुए भी किसी को कहा नहीं,और भी कई बातें हमने सुनी हैं, चक्रधारी दीदी अपने अनुभव में बताया था कि वे अपने लिए भी बताते थे कि मैं 72 वर्ष की आयु में शरीर छोड़ूँगा और मेरा अन्त पेट की किसी बीमारी से ही होगा,और यज्ञ के बारे में भी बताते थे कि आने वाले समय में ऐसा–2 होगा,जो आज सब सामने आ रहा है।

14–बाबा की टचिंग की क्लीयर कैंचिंग............

चाहे उनके समर्पण के अनुमति की बात हो, कि वे जाने के लिए तैयार नहीं और बहनें रखने को तैयार नहीं, बहनों ने कहा बाबा कहेंगें तब सोचेगें, तब भाई साहब ने कहा कि हाँ बाबा से पूँछ लो, भाई साहब को तो बाबा की हाँ पहले से ही ज्ञात हो चुकी थी, और तभी बाबा का पत्र आता है कि जगदीश को कहो कि अभी वह नौकरी में अपना समय क्यों नष्ट करता है, सेन्टर पर रहकर बाबा की सेवा करे, या फिर सेवाओं की नवीनता हो मतलब बाबा की हर बात की टचिंग उसको हमेशा पूरी का पूरी कैच किया, चाहे बर्मा की सेवाओं का हो या अन्य कहीं की, बर्मा की सेवाओं में उन्होंने कहा कि बाबा कैसे उन्हें होटल से बाहर जाने के लिए

कहते हैं और कैसे वो ट्रस्टियों के पास जाने के लिए,सामने जाने के लिए बार–बार जैसे कह रहे हों और फिर बर्मा में कितनी सेवा हुई ! बर्मा में सेवाओं की शुरूवात हो या फिर विदेश की और एक बात, जो बार–बार फोन करने पर भी कोई उठा नहीं रहा फिर भी बाबा बार–बार कह रहे हैं कि फोन करो, फोन करो,उसके बाद फिर उस देश में कितनी सेवाएं हुई या फिर कम्युनिस्ट के गढ़ रसिया में परमात्म परचम लहराना हो।

15– नवीनता के साथ त्याग का भी त्याग ....

इतना कुछ करते शुरूवात में तो हर कार्य करते थे, पूरी ज्ञानामृत लिखते थे पर वो लेख छाप दूसरों–दूसरों के नाम से देते थे, यज्ञ के हर कार्य को भगवान का मान उतनी वैल्यू देकर जिस भावना सेकिया, पर कभी भी कोई नाम या मान की अभिलाषा नही रखी, पर अगर किसी ने की भी तो, उसे कभी भी स्वीकार नहीं किया, कभी स्टेज पर स्थान नहीं, कोई विंग के चेअरपर्सन तो क्या कोआर्डीनेटर भी नहीं, यहाँ तक कि मेम्बर भी नहीं बने,जबकि विंग की शुरूवात भाई साहब ने ही की थी, शिविर,कॉन्फ्रेन्स आदि –2 कितनी सेवाओं का प्लैन भाई साहब का ही था,पद कभी कोई भी नहीं लिया,पीछे रहकर आगे तक की सेवाएं की पर आगे कभी नहीं आये,यज्ञ को शिखर पर पहुँचाने के लिए हर पल काम किया, पर स्वयं को नींव का पत्थर ही रखने में सदा संतुष्टता का अनुभव किया।

हे साहित्य के पुरोधा, आध्यात्म के मूर्धन्य प्रतिनिधि, सद्विवेक के सिपहसालार, सत्य के सारांश, यज्ञ के अनमोल हीरा, कर्मेन्द्रिय नरेश, कुमारों के आलिम आदर्श, कविता के ओजस्वी छन्द, फाजिल नज्म, अमिट दस्तावेज, अनन्त श्रोत्र, बहता प्रवाह, खुली किताब, नवीनता के रंग, मंच के करिश्माई बहार, बुलन्द हौंसले, श्रीमत की अव्वल तस्वीर, समर्पण की तावीर, त्याग की परिभाषा, तपस्या का प्रारूप, उमंगों का पथ, कुशलता की राह, उर्जा का पर्याय, बेजोड़ प्रतिभा के

धनी, हे अनुकरणीय, अतुलनीय वन्दनीय आप जैसे अग्रज को पाकर भला कौन नहीं अपने भाग्य पर गर्व करेगा, आपकी असीम अनुकम्पा अनेक प्रारूपों में हम सबके जीवन को उज्ज्वल बनाने में पथप्रदर्शक की भाँति हर मोड़ पर रहनुमाई बन इमदाद कर रही है, हम टीचर्स के लिए जो ज्ञान का प्रचुर भण्डार कलमबद्ध करके आपने दिया है, वो हमारी बुद्धि की शार्पनेस बढ़ाने में ही नहीं, जीवनपथ पर अवरोध रहित क्षितिज तक पहुँचने में तीव्रता भी प्रदान कर रहा है, हे अजीज उस्ताद हम आपके अत्यन्त ऋणी हैं और सदा ही ऋणी रहेंगें, हम ही क्या समस्त यज्ञ के साथ ये सारा संसार भी आपका ऋणी है, और सदियों तलक ऋणी रहेगा, आदरणीय भाई साहब न सिर्फ यज्ञ की बुलन्दी में आपका अनमोल योगदान रहा बल्कि हम सबको भी यहाँ तक पहुँचाने में आपका सहयोग सदैव ही अविस्मरणीय रहेगा, हे महान विभूति, पुनीत आत्मा सरल हृदय, मानवता की अद्वितीय हस्ती, विद्वता की पराकाष्ठा से परिपूर्ण, सादगी एवं श्रेष्ठता की प्रतिमूर्ति, मेरे अतिसय प्रिय अग्रज आपको अन्तस की गहराई से दिल की दुआएं एवं आभार के साथ मेरा कोटि–कोटि नमन।   ओम शान्ति

ब्र0 कु0 सुमन

जानकीपुरम, लखनऊ